International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 19-04-2019; Accepted: 21-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 33-35

एक समन्वयकारी विचारक के रूप में कबीर की प्रासंगिकता

डॉ0 आफरीन खान

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग, समाज विज्ञान एवं मानविकी अध्ययनशाला, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

मध्यकालीन भक्ति कवियों में कबीर का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा। कबीर एक समाज सुधारक और राजनीतिक चिंतक के रूप में सामने आते हैं। कबीर अपने समकालीनों पर ही नहीं बल्कि आधुनिक विचारकों पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। समन्वय का संदेश कबीर के जीवन का पर्याय है। कबीर का समन्वय का तरीका भी उनके व्यक्तित्व की तरह ही अनोखा था। अपने दोहों, वाणियों और साखियों के ज़रिये उन्होनें बेबाक फक्कड़पन के साथ अपने समय के समाज के दोषों-दुर्गुणों को उजागर कर दिया। कबीर के विचार जिसमें बहुत ही प्रगतिशील चिंतन का दर्शन होता है, आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। इस शोध प्रपत्र में कबीर के राजनीतिक-सामाजिक विचारों का विश्लेषण और आज के सन्दर्भ में उनके विचारों की प्रसंगिकता की जाँच करने का प्रयास किया गया है। शोध पद्धति के रूप में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

मूल शब्द : भक्तिकालीन कवि, समन्वय, बेगमपुरा, कबीर के राजनीतिक विचार, सामाजिक विचारक।

प्रस्तावना

भारतीय चिंतन अनेकता में एकता के सिद्धांत को साकार प्रदान करता है। भारतीय वैदिक विश्वदृष्टि, उपनिषदों का दर्शन, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम एवं ईसाई धर्म का सम्मिश्रण इसका उदाहरण है। प्राचीन, मध्ययुगीन एवं आधुनिक भारत में अनेक विभिन्नताओं के होते हुए भी व्यवहार, लौकिक प्रक्रिया, न्याय तथा राज्य सिद्धांतों में पर्याप्त समानता और निरंतरता पाई जाती है। इस्लाम के आगमन से भिन्नताएं एवं विरोधाभास तो उत्पन्न हुए किन्तु मध्यकालीन भक्ति कवियों और संतों तथा सूफ़ी विचारकों ने सूफ़ी एवं भक्ति परंपरा द्वारा समन्वय, सहयोग एवं एकीकरण के जो प्रयास किये उसके फलस्वरूप एक समन्यवादी हिंदुस्तानी संस्कृति का विकास हुआ।[1] चाहे वो चिश्ती, बेक्ताशी और अल्वी की सूफ़ी परंपराए हो या उत्तर में रामानंद, रविदास, सूरदास, कबीर, और दक्षिण में अचार्य त्यागराज इत्यादि की भक्ति परंपरा, सभी ने अंधविश्वासों, रूढ़ियों और जात-पात के खिलाफ़ आवाज़ उठाई और इनका भेद भुलाकर समाज के नव निर्माण का संदेश दिया।[2] मध्यकालीन भक्ति कवियों में कबीर का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा। कबीर एक समाज सुधारक और राजनीतिक चिंतक के रूप में सामने आते हैं। कबीर अपने समकालीनों पर ही नहीं बल्कि आधुनिक विचारकों पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। अंबेडकर ने उन्हें अपना प्रथम गुरु माना है और उन पर कबीर का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।[3] कबीर तत्कालिक समाज को आध्यात्मिक, धार्मिक, दार्शनिक एवं साधना के स्तर पर जीवन के समन्वय का संदेश देते दिखाई देते हैं।

समन्वय का संदेश कबीर के जीवन का पर्याय है। कबीर का समन्वय का तरीका भी उनके व्यक्तित्व की तरह ही अनोखा था। अपने दोहों, वाणियों और साखियों के ज़रिये उन्होनें बेबाक फक्कड़पन के साथ अपने समय के समाज के दोषों-दुर्गुणों को उजागर कर दिया। समाज के सभी वर्गों के दुराव को तार-तार कर रूई की तरह धुन दिया एक सच्चे जुलाहे की भांति गुणों के धागों को उकेरा, पिरोया और फिर अपनी अद्भुत रीति से समन्वय व सदभाव की चादर बुन डाली।[4] आज भी कबीर की झीनी झीनी बीनी चदरिया प्रेम व सदभाव का पाठ सिखाती है। आमतौर पर कबीर और उनके जैसे भक्तों व सूफ़ी संतो पर कवियों और कुछ मध्यकालीन इतिहासकारों ने थोड़ा बहुत लिखा है परंतु उनका संकेन्द्रण कबीर के धार्मिक व साहित्यिक दृष्टिकोण पर ही रहा। कबीर के सामाजिक व राजनीतिक चिंतन पर चर्चा का अभाव दिखता है। यह बात ध्यान में रखने की है कि कवियों के भी अपने राजनीतिक विचार होते हैं, समाज के प्रति सारोकार होते हैं और तत्कालीन कवियों के भी अपने सामाजिक-राजनीतिक विचार थे। उस समय भी शंकरदेव, बसवन्ना, दादू, नानक, रैदास, रजब, तुलसी और कबीर जैसे संत कवि थे जिन्होंने तत्कालिक राजनीतिक-सामाजिक मुद्दों पर गहन चिंतन किया किन्तु उनके विचारों के इस पहलू पर बहुत ध्यान नहीं दिया गया।[5] अतः इन संत-दार्शनिकों के विचारों के इस पक्ष का अध्ययन अत्यंत रोचक और लाभदायक सिद्ध होगा, खासकर कबीर के विचारों का जिसमें बहुत ही प्रगतिशील चिंतन का दर्शन होता है। मध्यकालीन युग में कबीर का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि उन्होंने जिस प्रकार की कविता की और जिस तरीके से उन्होनें सबको साथ लेकर चलने की, खासकर ग़रीब बहुजन समाज को साथ लेकर चलने की कोशिश की, उनकी सोच को आवाज दी उससे समाज परिवर्तन का एक नया दृष्टिकोण उभरा जिसे आज सबाल्टर्न विचारधारा कहते हैं। कबीर इसी सबाल्टर्न विचारधारा के प्रवर्तक के रूप में सामने आते हैं।[6] सामंतवादी मध्ययुग में कबीर लैंगिक समानता की बात करते हैं। स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व की विचारधारा का समर्थन करते है जो उन्हें एक प्रगतिशील उदारवादी चिन्तक के रूप में प्रतिष्ठित करता है। साथ ही कबीर एक ऐसे समाज की वक़ालत करते हैं जहां आर्थिक समानता होगी, कर मुक्त व्यवस्था होगी। कबीर राज्यविहीन, वर्ग व जातिविहीन आदर्श समाज की अवधारणा रामराज्य या आदर्श राज्य की संकल्पना प्रदान करते हैं जिसे वह बेगमपुरा की संज्ञा देते हैं।[7] वास्तव में यह विचार अत्यंत ही प्रगतिशील और आधुनिक हैं। जाति या धर्म से ऊपर उठकर एक समतावादी और समन्वयवादी आदर्श समाज की परंपराओं को आगे ले जाने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। मजहब जाति या वर्ग पर आधारित भेदभाव और ऊंच-नीच का पूर्ण विरोध करते हैं और वाहनों को समूल उखाड़ फेंकने का संदेश देते हैं वह व्यक्ति को आत्म चेतना और आंतरिक को पहचानने के लिए प्रेरित करते हैं जिससे मानवीय समानता एकता एवं प्रतिष्ठा को कायम किया जा सके। व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की विचारधारा का समर्थन कबीर के विचारों में दिखता है जो उन्हें एक प्रगतिशील उदारवादी चिंतक के रूप में प्रतिष्ठित करता है

कबीर अवाम की वाणी के उद्घोषक है। उनकी वाणीका प्रवाह धर्म, वर्ग, रंग, नस्ल, समाज, आचरण, नैतिकता और व्यवहार आदि सभी क्षेत्रों तक हुआ। यह प्रवाह केवल किसी ख़ास वर्ग या समुदाय के नहीं अपितु मानव मात्र के लिए था।[8] कबीर सत्ता लोलुप शासकों और राजकीय कर्मचारियों की निंदा करते हैं और उनके द्वारा किये जाने वाले शोषण व दमन का विरोध करके उन्हें लोक कल्याण का ज्ञान देते हैं। कबीर क्रांति और विरोध के मार्ग के रूप में भक्ति को चुनते हैं और यही उनके विरोध की तकनीक भी है। कबीर के लिए भक्ति का अर्थ केवल ईश्वर की उपासना नहीं है बल्कि कबीर के लिए भक्ति का अर्थ है सामूहिक भागीदारी और साझेदारी जो प्रचलित सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के बदलाव एवं पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक है।[9] कबीर जनता को सावधान करते हैं कि धर्म के नाम पर सत्ताधारी समाज में विभाजन एवं शोषण की कोशिश करते हैं अपनी वाणी के जरिए लगातार इन पर आक्रमण करते हैं। कबीर ने सामंतवादी प्रतिक्रिया और अभिजात्य वर्ग द्वारा किए जाने वाले भेदभाव की कठोर निंदा की। कबीर का समग्र साहित्य, उनका समृद्ध जीवनदर्शन भारत की एकता, अखंडता, प्रगति, जातीय समरसता, सर्वधर्म समभाव, सामाजिक न्याय और नवीन मानव मूल्यों के प्रतिपादन का अद्वितीय दस्तावेज है।

कबीर की वाणी सामाजिक क्रांति का आह्वान है।[10] राजनीतिक दृष्टि से कबीर का युग अस्थिरता और अशांति का युग था। बादशाह, सामंत, राजकीय कर्मचारी वर्ग सत्ता का प्रयोग अपनी ऐशो आराम और प्रजा को सताने के लिए किया करते थे। यह युग शासक और शासितों, पोषक और पोषितों, धनी व निर्धन के मध्य विभक्त था। कबीर ने इस असमानता एवं शोषण का खुलकर विरोध किया जिसकी वजह से कई बार उन्हें सत्ता का विरोध भी झेलना पड़ा। कबीर के लिए मौजूदा सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के विरोध के लिए भक्ति एक विकल्प और एक तकनीक थी, भक्ति इससे बचने का एक मार्ग भी था। कबीर अपने विचारों में एक भक्त, एक जुलाहा और एक विद्रोही बनी रहे।[11] बेगमपुरा की अवधारणा उनकी चेतना और विद्रोही विचारों का एक प्रतिबिंब है।[12] बेगमपुरा, ऐसे सार्वभौम समाज की अवधारणा पर आधारित था जहां पर किसी भी प्रकार की राजनीतिक-आर्थिक व मौलिक विभेद की गुंजाइश नहीं होगी, जो गरीबों और शोषितों के कल्याण पर आधारित होगा। अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था को चुनौती देने वाली कबीर की विचारधारा सर्वाधिक उग्र परिवर्तन की वैकल्पिक समाज व्यवस्था थी। बेगमपुरा कबीर के विचारों का एक उपयुक्त आदर्श और लोकप्रिय या सामान्य इच्छा का प्रतिबिम्ब था। उनका राजनीतिक आदर्श, बेगमपुरा, ईश्वर का राज्य था। दुखों और कष्टों से मुक्त, निजी संपत्ति, कराधान, राजशाही और सामाजिक पदानुक्रम से रहित एक आदर्श ग्राम समाज था, जहाँ जाति-धर्म तथा लिंग पर आधारित किसी प्रकार का शोषण व भेदभाव नहीं होगा। यह एकता और मानवता पर आधारित समाज होगा इसका अर्थ यह है कि इस राज्य में जन संप्रभुता एवं नागरिकों के बीच समानता होगी जो सभी के लिए स्वतंत्रता के आदर्श में परिणित होगी।[13] आदर्श राज्य के निर्णय निर्माण प्रक्रिया एवं राजनीतिक एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए जनता की सामूहिक भागीदारी होगी और सभी को समान रूप से धार्मिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता उपलब्ध होगी। कबीर द्वारा व्यक्त समरूपता समन्वय और भक्ति के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप में प्रकट होती है। कबीर के आदर्श राज्य का आधार है- न्याय, समानता और स्वतंत्रता।[14]

निश्चित रूप से कबीर का क्षेत्र राजनीति नहीं था और इतने छोटे तबके के व्यक्ति के लिए तत्कालीन राजनीति में प्रवेश करने के लिए कोई अवसर भी नहीं था। फिर भी आसपास के वातावरण में जो कुछ घट रहा था कबीर उससे चिंतित एवं परेशान अवश्य थे और अपने चिंतन के द्वारा लगातार तत्कालिक राजनीतिक सत्ता की आलोचना करते रहते थे।[15] कबीर का राजनीतिक चिंतन लोक कल्याण की भावना पर आधारित था, वह एक भ्रष्टाचार-मुक्त, समानता पर आधारित न्याय पूर्ण एवं स्वतंत्र समाज की स्थापना करना चाहते थे जिसकी रूपरेखा उन्होंने बेगमपुरा की अवधारणा में प्रस्तुत की थी।

कवि व दार्शनिक होने के साथ ही कबीर एक समाज सुधारक भी थे। उन्होंने लगातार भक्ति के आडंबर पर चोट की। साथ ही अंधविश्वासों, रूढ़ियों, कुप्रथाओं व कुपरंपराओं आदि पर भी खुलकर प्रहार किया क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में सबसे अधिक उत्पीड़न साधारण जनता का ही होता है। जनसाधारण के उत्थान एवं उद्धार के लिए कबीर एक विराट समन्वय की चेतना लेकर आगे आए। कबीर ने पूरे साहस के साथ देश की दशा को भली-भांति परखा और समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई।[16]

कबीर एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हैं। वे मुल्लाओं और पंडितों के बताएं धर्म की बजाय मानवधर्म की बात करते हैं। कबीर जनता को सावधान करते हैं कि धर्म के नाम पर सत्ताधारी वर्ग समाज के विभाजन एवं शोषण की कोशिश करते हैं, अतः अपनी वाणी के जरिए वे लगातार उन पर आक्रमण करते रहे। आज हम जिस धार्मिक कट्टरता के युग में रह रहे हैं वहां कबीर जैसे विचारक बहुत महत्वपूर्ण हो जाते है। कबीर ने स्पष्ट रूप से कहा कि कोई भी धर्म या मजहब हिंसा अन्याय अत्याचार नहीं सिखाता मजहब तो प्रेम और दया सिखाता है। धार्मिक मतभेद और टकराव धर्म के मूल को ना जानने के कारण होते हैं क्योंकि मूल धर्म तो एक ही है। उनके लिए राम-रहीम या ईश्वर-अल्लाह में कोई फर्क नहीं, मंदिर-मस्जिद दोनों में एक ही ईश्वर रहता है जो सर्वव्यापी है। सिर्फ़ पूजा उपासना के तरीकों में फर्क के कारण उनका स्वरूप अलग अलग दिखाई देता है [23] और यही बात अगर समझ में आ जाए तो सारे झगड़े अपने आप मिट जाए। मगर सत्ताधारी वर्ग इन विभेदों को बनाए रखना चाहते हैं क्योंकि बटी हुई जनता सदैव उनके हित में होती है। वर्तमान के संदर्भ में भी यह बात बिल्कुल सटीक बैठती है। विभिन्न मतों व पंथों के बीच कटुता और धर्मांधता की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलना किसी भी प्रकार से समाज व देश के हित में नहीं होता। इस कारण देश में कभी भी शांति और एकता का कोई स्वप्न देखा नहीं जा सकता।[18] ऐसे में कबीर ने मानव जीवन के अंतर्निहित एकता को चित्रित करने का प्रयास किया। कबीर ने समानता, सहानुभूति व सहयोग का संदेश दिया और मानव मात्र को एक दूसरे के लिए जीने का रास्ता दिखाया।[19]

वास्तव में कबीर को एक युग परिवर्तनकारी विचारक एवं सामाजिक क्रांति के प्रणेता के रूप में जाना जा सकता है। उन्हें धार्मिक जागरण का अग्रदूत भी कहा जाता है। कबीर ने अपनी प्रभावी विचारधारा से मध्य युग में सोए हुए भारत को जगाया, वैचारिक सोच व चिंतन के नए आयामों के द्वारा नव चेतना का मंत्रघोष किया। अपनी वैचारिक संपदा के कारण मध्ययुगीन भक्ति कालीन संतों में कबीर का एक प्रमुख स्थान है। निसंदेह वे एक युग निर्माता धर्म प्रवर्तक और सामाजिक क्रांति के अग्रणी महापुरुष थे। कबीर ने समाज में जो भी विकृतियों देखी उन का निडरता से पर्दाफाश किया।[20] कबीर ने अपने समय पर जाति व्यवस्था पर कड़े प्रहार किए, वर्ण व्यवस्था को देश की प्रगति और समाज की एकता में बाधक बताया। कबीर को वर्ग विभाजन स्वीकार नहीं, धर्म, जाति व अर्थ के आधार पर विघटित समाज का वह विरोध करते है। वे संप्रदाय, धर्म, जाति के बंधन और पाखंडो को ध्वस्त करके केवल मानवता के कल्याण का अलख जगाते है। कबीर जनता के मध्य से आए संत थे। वह जो देखते-सुनते थे, भोगते थे, उसी को अपने अनुभवजन्य ज्ञान के सहारे जनता को बता देते थे। सरल भाषा में रचे व गाए गए उनके पद, भजन और साखियां जन जागरण का प्रमुख माध्यम बनी। इसके आधार पर तत्कालीन समाज में चेतना आई। कबीर को सर्वधर्म समन्वय कारी सुधारक माना जाता है।[21] वे भारत की एकता के जबरदस्त समर्थक थे। उन्होंने जनसंप्रभुता, समानता एवं मानव गरिमा के आधुनिक मूल्यों को प्रस्तुत किया। समाज में समता व सामाजिक न्याय की प्रतिस्थापना करना ही उनका ध्येय था जिसके लिए उन्होनें मानवता का बीज मन्त्र दिया। यही कारण है कि गुरु रबिन्द्रनाथ टैगोर उन्हें मुक्तिदूत और

उनकी कविताओं को चिर आधुनिक कहकर संबोधित करते हैं ।[22] एक समन्वयकारी विचारक के रूप में कबीर के विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक है और आंखों देखी की जो संवादधारा उन्होंने चलाई उसकी प्रासंगिकता आज के अपवाहों, झूठी खबरों (फेक न्यूज़) और भ्रम व उन्माद को बढ़ावा देनेवाली राजनीति के युग में और भी प्रासंगिक और आवश्यक हो जाती है। वर्तमान में आंखों देखी अर्थात सत्य की कसौटी पर तथ्यों को जांचने के बाद विवेक के आधार पर निर्णय लेने की परम्परा को पुनः स्थापित किये जाने की आवश्यकता है तभी भारतीय संस्कृति अपने मौलिक स्वरूप को बनाएं रख सकेगी । भारत में सदैव वैचारिक कट्टरता के बजाय वैचारिक सहिष्णुता विद्यमान रही है, यही हमारे दर्शन की प्रवाहशीलता को तय करती रही है । निसंदेह ही कबीर के विचार और उनकी शिक्षा जो समन्वय, सौहार्द एवं सहिष्णुता के मूल्यों पर आधारित है आज के भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रसांगिक एवं पथ-प्रदर्शक है।

संदर्भ

1. नंदा, लिजा. (2016). द डिलेम्मा ऑफ़ आइडेंटिटी : ए स्टडी ऑफ़ हिन्दुस्तानी कल्च. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इंग्लिश लैंग्वेज, लिटरेचर एंड हुमैनिटिस. वॉल्यूम iv, इश्यूज़ v. मई
2. सिरस्वाल, देशराज. (2013). संत कबीर और दलित-विमर्श. 22 जून. पृ. 1. www.academia.edu/4785722/Sant_Kabir_and_Dalit_Discussion से उद्धृत
3. भारती, कँवल, (2017), कबीर के निर्गुणवाद से प्रभावित थे डॉ अम्बेडकर, फॉरवर्ड प्रेस, ऑनलाइन मैगज़ीन, 1 जुलाई, पृ. 1, www.forwardpress.in/Kabir-ke-nirgunwad-se-prabhavit-ambedkar/ से उद्धृत
4. शर्मा, श्रीराम, (2000), 'युगनायक कबीर का समन्वय सन्देश', अखण्ड ज्योति, अंक – 2, फ़रवरी, पृ. 11-12, http://literature.awgp.org/akhandjyoti/2000/February/v2.8 से उद्धृत
5. राय, हिमांशु, (2017), पोलिटिकल आइडियाज ऑफ़ कबीर, महेंद्र प्रताप सिंह एवं हिमांशु राय (सं.) इंडियन पोलिटिकल थॉट : थीम्स एंड थिंकर्स, II एडिशन, नई दिल्ली, पियर्सन पृ. 95
6. पाण्डेय, अंशु. (2013). दलित ट्रेंड्स एंड कांसेंनेस: ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ कबीर पोएट्री. द एन्चान्तिंग वेर्सेस लिटरेरी रिव्यु. www.theenchantingverses.org/kabir-poetry-by-dr-anshu-pandey.html से उद्धृत
7. राय, हिमांशु, (2017), पुर्वोक्त, पृ. 100
8. सिरस्वाल, देशराज. (2013). पुर्वोक्त, पृ. 2
9. राय, हिमांशु, (2017), पुर्वोक्त, पृ. 101
10. चंचरीक, कन्हैयालाल, (1999), महात्मा कबीर : जीवन और दर्शन, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, पृ. 47
11. राय, हिमांशु, (2017), पुर्वोक्त, पृ. 97
12. राय, हिमांशु, (2015), 'एक्सप्लोरिंग पोलिटिकल आइडियाज ऑफ़ कबीर', फ्रंटियर, ऑटम न.,वॉल्यूम 48 (2) पृ. 14
13. वही. पृ. 16
14. वही. पृ. 17
15. शर्मा, सरनाम सिंह, (2011), कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत (भाग-I), दिल्ली, कल्पना प्रकाशन, पृ. 177
16. गुप्ता, सरोज (2002), 'समानता के उद्घोषक', सुरेश आचार्य (सं.), कबीर : हंसा कहौ पुरातन बात, सागर, अमन प्रकाशन, पृ. 87
17. प्रसाद, दिनेश्वर (2001), 'कबीर की समाज दृष्टि', राजकिशोर (सं.), कबीर की खोज, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृ. 53-68
18. परशुराम, चतुर्वेदी, (1964), कबीर साहित्य की परख, इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, पृ. 115-116
19. परशुराम, चतुर्वेदी, पुर्वोक्त, पृ. 119
20. चंचरीक, कन्हैयालाल, (1999) पुर्वोक्त, पृ. 53
21. त्यागी, रूचि, (2016), 'कबीर : एक समन्वयवादी विचारक के रूम में', रूचि त्यागी (सं.) प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत का राजनीतिक चिंतन: प्रमुख परम्पराएँ एवं चिन्तक, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, पृ. 443
22. टैगोर, रबिन्द्रनाथ. (2007). वन हंड्रेड पोयम्स ऑफ़ कबीर (पुन: मुद्रित). लंदन: बुक जंगल